

Gainer Academy

CLASS - 11TH

Psychology (मनोविज्ञान)

Chapter - 4

Sensory, attentional and perceptual processes

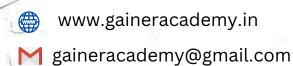
संवेदी, ध्यानात्मक और अवधारणात्मक

प्रक्रियाएं

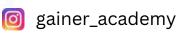






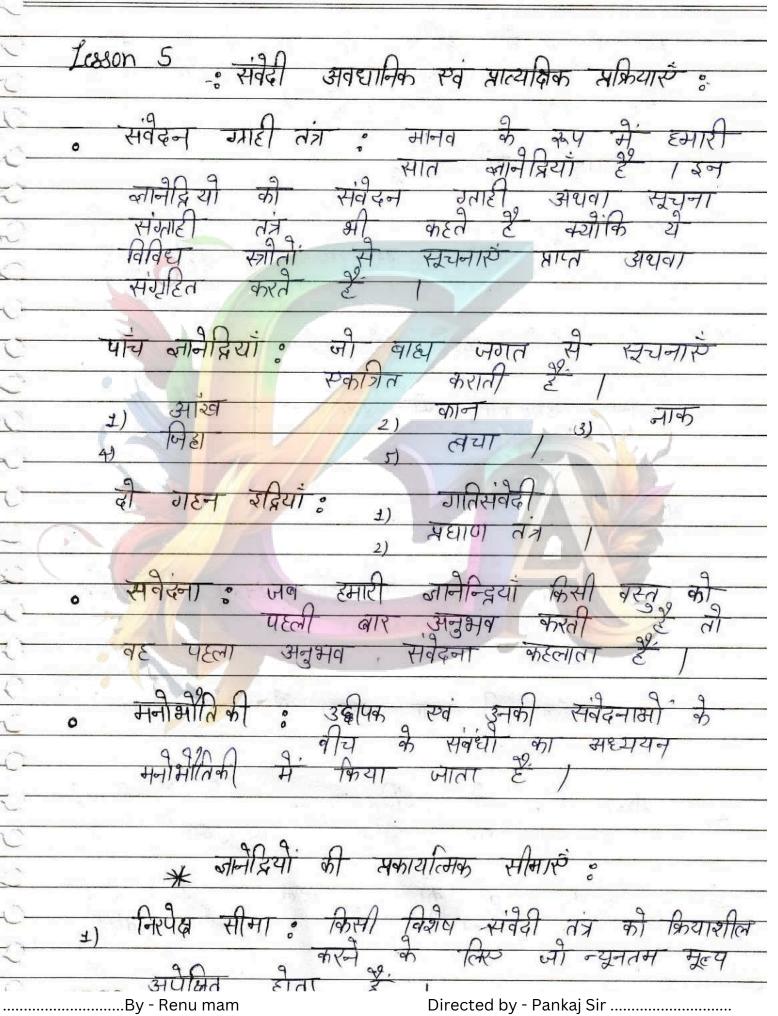


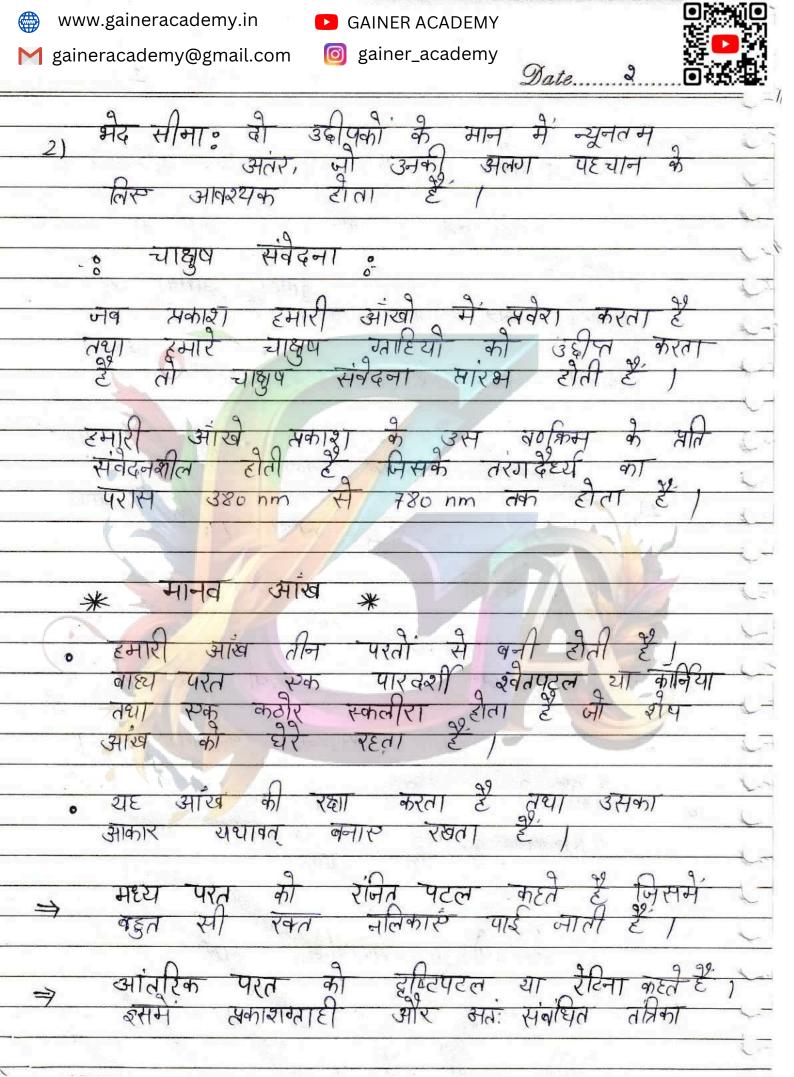




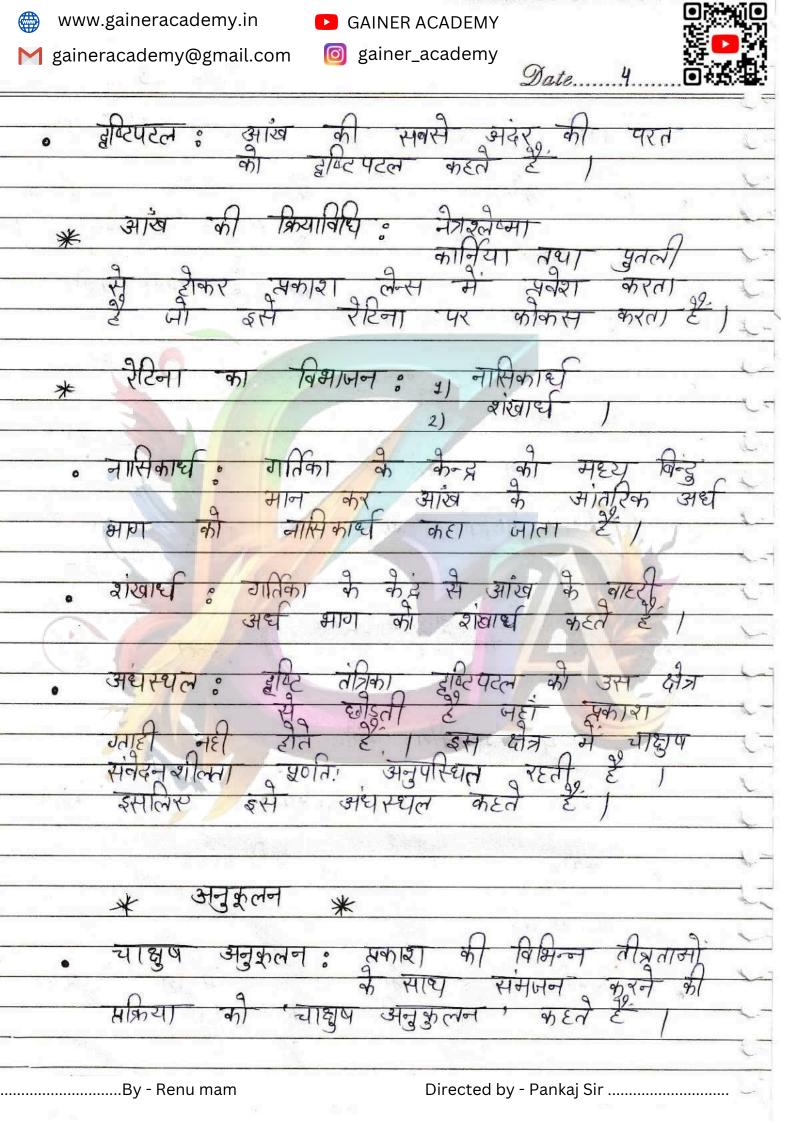


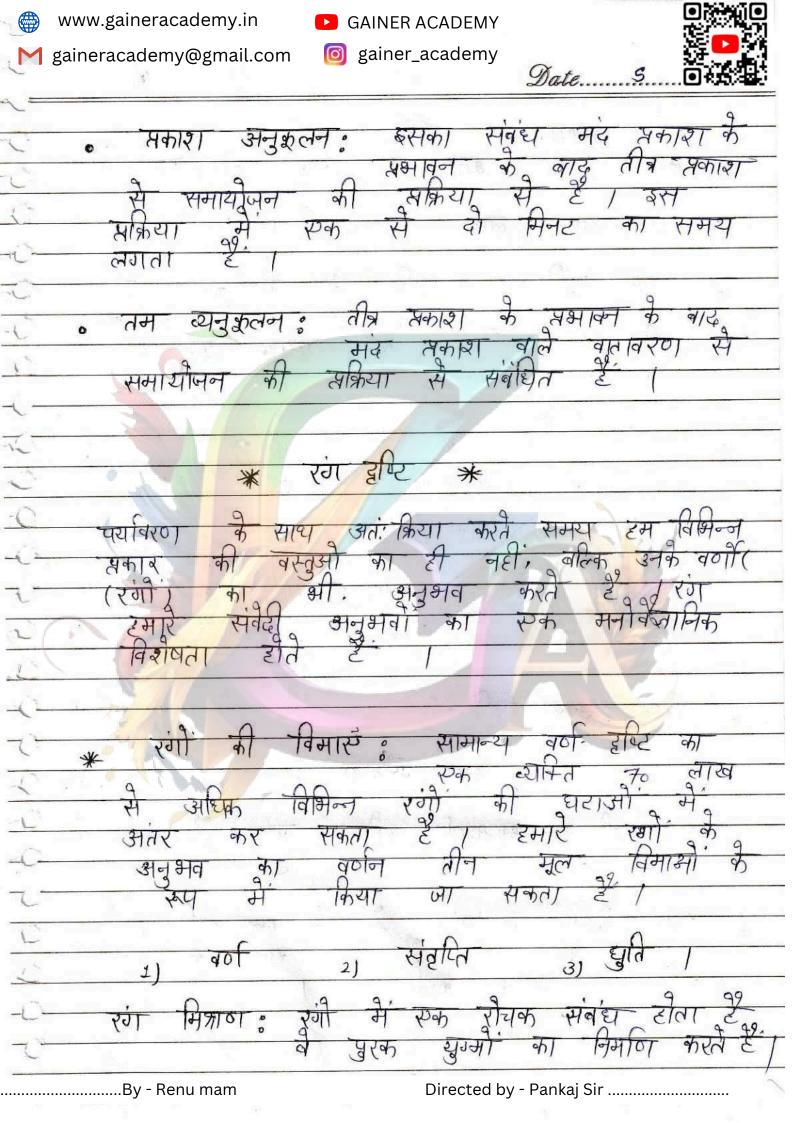
Date 1

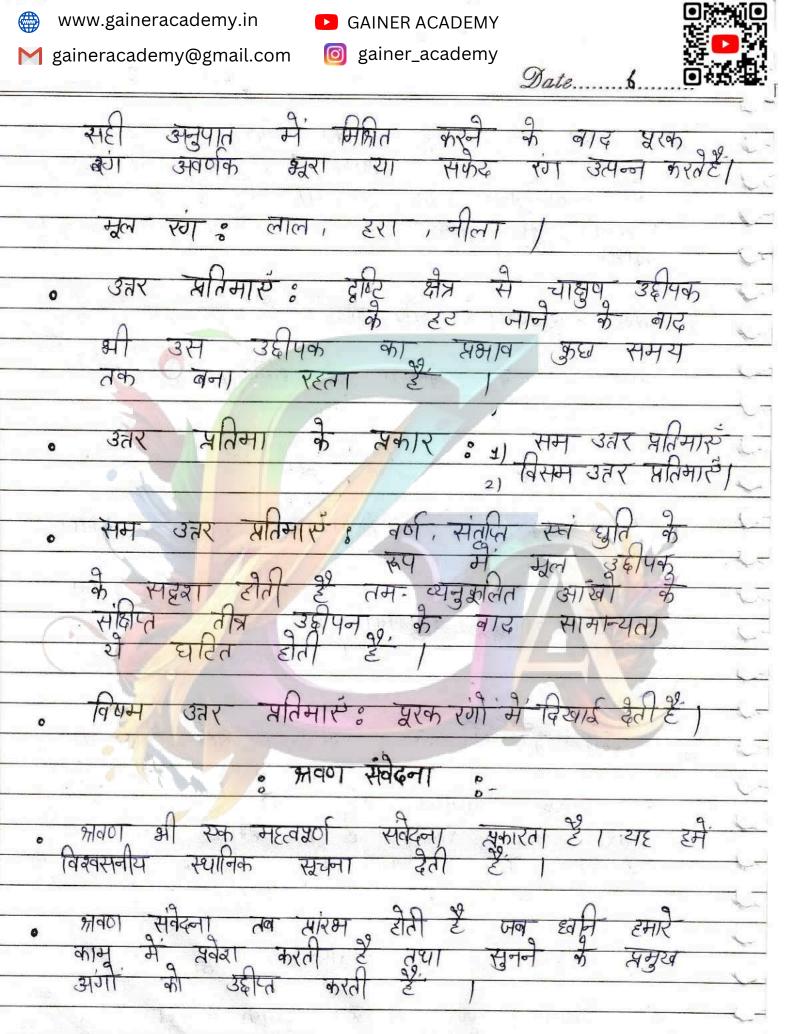




M	www.gaineracademy.in
	कौशिकाओं का रक विस्तृत जाल पाया जाता है।
	• जलीय कीष्ठ : जलीय कीष्ठ कॉर्निया स्वं तेन्स् के मध्य में स्पित होता है
U -	यह आकार में छीटा होता है तथा इसमें पानी जैसा द्रव्य भरा रहता है जिसे नेत्रीद
	• काचाभ कीष्ठ : कान्याभ कीष्ठ वेन्सं ख्वं रैटिना इसमें जैती जैसा प्रीटीन भरा रहता है जिसे
	• पक्ष्माभिकी वैशियां : समंजन रक रैसी स्रक्रिया र्र
	दूरियों की वस्तुओं की कोकस करने के लिस् लेन्स अपने आकार में परिवर्तन करता है। यह प्रक्रिया पक्ष्मिमी, परिवर्तन से जुड़ी
	हाता ह द्वारा संचालत हाता ह
	अन्य मानवीय संवैदनारूँ ; 4) स्पर्श रुवं अन्य त्वया सवैदनार्र्
Q	र स्वाद 5) गति संवैदना /
3	3) पारिगारिका : आंख में अने वाले प्रकाश की मात्रा
<u> </u>	• पार गारका ; अखि में अने वाले प्रकारा की मात्रा





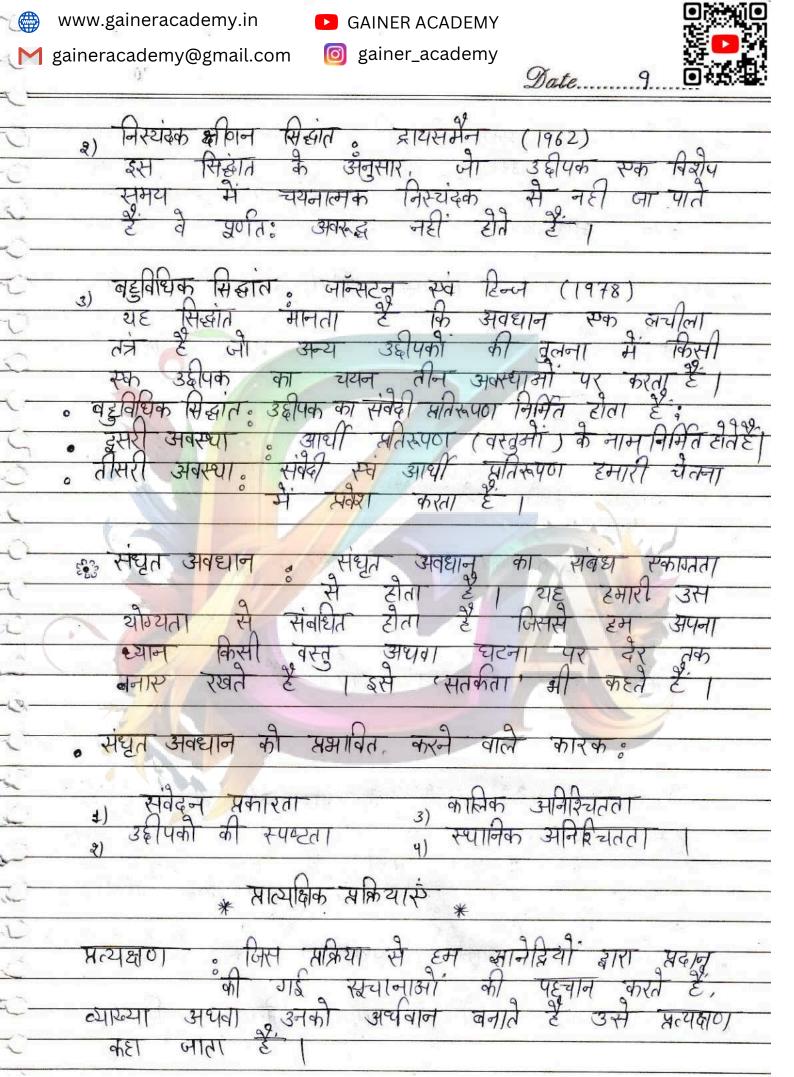


	www.gaineracademy.in GAINER ACADEMY
M :	gaineracademy@gmail.com
	मानव कान : क्रान मवण उद्दीपको का साधामिक ग्राही,
	किंतु यह शरीर- संतुलन की बनार रखने में भी रमारी सहायता करता हैं।
	. कान की संरचना के तीन खंड है। बाह्य, मध्या आंतरिक कान।
	• कान की क्रियाविष्टि • पिन छाने कंपन की रुकित करती हैं तथा असे आवा द्वारा कर्ण पटह तक पहुंचाती हैं।
	् अक्यानिक सिक्रियार ;-
	, अवधान ; वह सिकया विस्तृ आधार पर उद्दीपक समूह से कुछ उद्दीपकों का चयन किया जाता है उसी की सामान्यतया अवधान कहा जाता है
(. सतर्कता : व्यक्ति की तत्परता से होता है जिससे वह
	करता है।
	, रमागतता , रक समय में कुछ विशेष वस्तुओं के बीध के लिस अन्य वस्तुओं को बुद्धि से बाहर रखते हुस उस पर ध्यान
-	कीर्रत करने की स्रिक्रिया की स्काग्तता कहते हैं। अवधान का रुक कैंद्र और रुक किनारा हीता है।
}	. अवधान वर्गीकरण :
-	दी सकारों में विभाजित करता है -

.....By - Renu mam

Directed by - Pankaj Sir

 www.gaineracademy.in □ GAINER ACADEMY M gaineracademy@gmail.com □ gainer_academy □ Date 	
1) चयमात्मक और संधृत ।	į.
, विभक्त अवधान : कभी-2 हम रूक ही समय में है। भिन्न क्रियाकलाएं। पर ध्यान हैं	L .
सकते हैं। जब रैसा होता है तब हम उसे विभनत अवधान कहते हैं।	L:
• चयनात्मक अवधान : चयमात्मक अवधान का सर्वधा मुख्यतः अनेक उद्दीपकी में से कुछ सीमित उद्दीपकी अधवा वस्तुसी कै चयन से होता हैं।	1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 -
, न्यथनात्मक अवधान की प्रभावित करने वाले कारक ;) बाह्य कारक , उद्दीपकी के लक्षणी से संबंधित होते हैं। अन्य नीजों के स्थिर टीने पर उद्दीपकी के आकार , तीव्रता तथा गति अवधान के ममुख	
के आकार तिव्वति तथा जाति अवद्यम के समुख निर्धारक है।ते हैं। 2) आंतरिक कारक ॰ व्यक्ति के अदर पार जाते हैं। बगिक्ति किया जा सकता हैं। अभित्रेरणात्मक कारक	ナージー
क्षेत्र चयनात्मक अवधान के सिद्धांत :	7 -
्रा निस्थंदक सिद्धांत ; ब्रांड बेन्ट (1956) इस सिद्धांत के अनुसार, अनेक उद्दीपक स्का ही साप हमारे गताहियों के पारप पहुंचते हैं और गत्मबरीध की स्थिति उत्पन्न करते हैं। 	



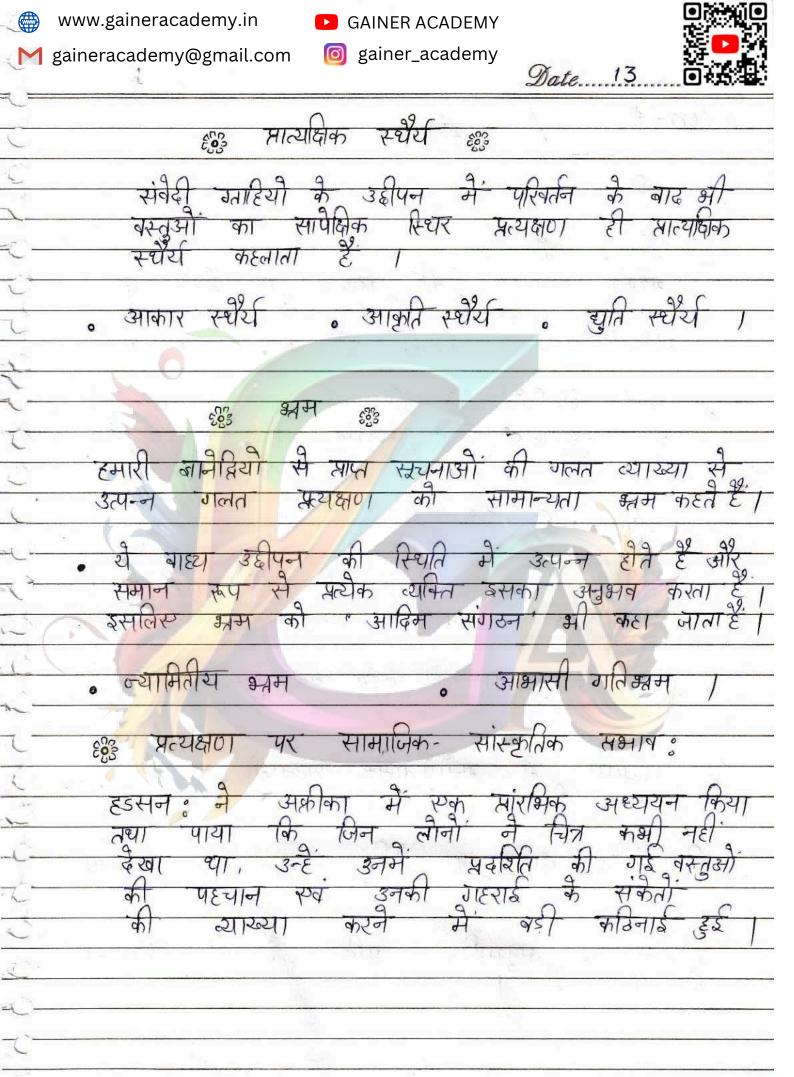
 www.gaineracademy.in □ GAINER ACADEMY M gaineracademy@gmail.com □ gainer_academy ② gainer_academy
अभिर्मिश्णा : प्रत्यक्षकर्ता की आवश्यकरार रुवं इन्छारू उसके प्रत्यक्षण की अत्यधिक प्रभावित करती है। तीम विभिन्न साधनों या उपायों से अपनी आवश्यकराओं रुवं इन्छाओं की भ्रति करना चाहते हैं।
. प्रत्यशारं अधवा प्रत्यिक विन्यास , किसी की गई रिशित में हम जिसका प्रत्यक्षण कर सकते हैं उसकी प्रत्यक्षण भी हमारे प्रत्यक्षण को प्रभावित करती हैं।
• संनानात्मक शैली : संनानात्मक शैली का संबंध अपने पथिवरण के साध संगत तरीके से व्यवहार करने से हैं।
अकित प्रत्यक्षण : चाक्षुष कीत्र की अधियुन्त सम्मन्त की अकित करने की अकित करने कि अविद्याल करने करने अकित अकित अरने अविद्याल करते हैं।
गैस्टाल्ट स्क नियमित आकृति अध्वा रूप की कहते हैं। गैस्टाल्ट मनी वेब्जानिकों ने यह भी बताया है कि दूमारी प्रमस्तिष्कीय प्रक्रियार हमेशा अच्छी आकृति अध्वा स्वाष्ट्रव का यत्यक्षण करने के विश् उन्मुख होती है। इसलिए प्रत्येक चीज की हम रूक संगठित
• गीस्टाल्ट मनीबैं जानिकीं के प्रमुख नियम व सिद्धांत :

M	www.gaineracademy.in GAINER ACADEMY gaineracademy@gmail.com gainer_academy Date
\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	1) निकरता का सिद्धांत जी वस्तुरूँ किसी स्थान अथवा समय में रुक दूसरे के निकट होती हैं वै रुक दूसरे से संबंधित अथवा स्क समूह के रूप में दिखती हैं।
	2) समानता का सिद्धांत , जिन वस्तुओं में समानता हीती हैं तथा विशेषताओं में वे रूक दूसरे के समान होती हैं वे रूक समूह के रूप में प्रत्यिक्ति होती हैं।
	3) निरंतरता का सिद्धांत : यह सिद्धांत बताता है कि जब वस्तुरू रूक सतत स्रितरूप सस्तुत करती है तो हम उनका सत्यक्षण रूक दूसरे से संबंधित के रूप में करते हैं।
	4) लघुता का सिद्धांत : इस नियम के अनुसार लघुद्दीत्र बुदद् पृथ्धभूमि की तुलना में आकृति
	s) समिनित का सिद्धात इस सिद्धात के अनुसार अस्मिनित पृष्ठभूमि की वुतना में समित क्षेत्र आकृति के रूप में दिखाई दैते हैं।
	6) अविध्विनता का सिद्धांत: इस सिद्धांत के अनुसार जेन किता है तो उसे हम आकृति के रूप में दैखते हैं।
	1) य्रिका सिद्धांत: उद्दीपन में जी तुप्त अंशः हीता है उसे हम भर लेते है तथा वस्तुओं का प्रत्यक्षण उनके अलग-2 भागों के

.....By - Renu mam

Directed by - Pankaj Sir

M	www.gaineracademy.in	
	रूप में नहीं बलिक समय आकृति के रूप में करते हैं	7
	* स्थान, गहनता तथा दूरी प्रत्यक्षण *	1
	स्थान : जिस चाबुव दीत्र या सतह पर वस्तुरूँ रहती हैं. गतिशील होती हैं. अथवा रखी जा सकती हैं उसे स्थान कहते हैं।	- C-
	ग्रहनता प्रत्यक्षण : जगत की तीन विमाओं से देखने की प्रक्रिया की द्वरी अपना	W-
	गहनता प्रत्यक्षण कहते हैं।	Ų.
	• स्कर्नेति संकेत (मनीवैद्यानिक संकेत) गहनता सत्यक्षण के स्कर्नेत्री संकेत तब समावी देखा जाता है।	1
(. सापेक्ष आकार . आन्छादन अधूना अतिव्यापित . रेखीय परिप्रैक्य . आकाशी परिपेक्य . समायेक्ष ऊंचार्च . रचनागुण सनणमा . गतिदिगतराभारन	
	े दिनेती संकेत (शारीरिक संकेत) प्रिविम स्थान में महनता प्रत्यक्षण के कुछ महत्वप्रण संकेत दीनों आंखों से प्राप्त हीते हैं। इनमें से तीन विशेष रूप से रीचक हैं।	\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \
	. दृष्टि पटलीय अथवा हिनेत्री असमत) . अभिसरण . संमजन /	\ \ \
	By - Renu mam Directed by - Pankai Sir	



— About -	
_ / 10001	

WELCOME TO GAINER ACADEMY

I am Pankaj Verma Welcome to Our Study Verse Learn Anything,
Anywhere, Anytime. Improve your skills with our Tutorials. Unlock your
potential and achieve success with us and Unleash your inner genius with
our expert guidance.

We are offering a wide range of educational programs for all age groups and all standerd. We have dedicated teachers for helping students to reach their full potential and also guide students of their journey to success.

we are also available on



www.gaineracademy.in



M gaineracademy@gmail.com

o gainer_academy

